Philosophy
BA I Hons
2
Subsidiary

चार्वाक का तत्व विज्ञान
Metaphysics or Materialism

चार्वाक का ~~~~ तत्व विज्ञान मूलतः उनके प्रमाण विज्ञान पर आधारित है। उनके अनुसार केवल प्रत्यक्ष से ही ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिन विषयों का प्रत्यक्षीकरण होता है उसी को वास्तविक या यथार्थ माना जा सकता है। प्रत्यक्ष केवल भौतिक पदार्थों का ही संभव है। अतः चार्वाक भूत या जड़ (Matter) को ही मूलतत्व (Ultimate Reality) मानता है। इसीलिए चार्वाक के दर्शन को भौतिकवाद (Materialism) भी कहा जाता है।

किसी भी तत्व मीमांसा में मुख्य तीन विषयों विश्व (World or Nature) आत्मा (Soul) और ईश्वर (God) के बारे में अध्ययन किया जाता है। इन तीनों विषयों के बारे में चार्वाक ने अलग-अलग मत व्यक्त किया ~~जाता~~ जा सकता है,

विश्व संबंधी विचार (चतुर्भूतवाद) में ~~यहाँ~~ अन्य भारतीय दर्शन विश्व की उत्पत्ति में पृथ्वी (Earth), जल (Water), वायु (Air) अग्नि (Fire) तथा आकाश (Ether) का संयोग मानते हैं परंतु चार्वाक आकाश को छोड़कर अन्य चार तत्वों पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि को ही विश्व का निर्माणक तत्व मानता है। आकाश को विश्व के निर्माण में सहायक नहीं मानता। आकाश का ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्षीकरण नहीं होने के कारण उसका निषेध करता है। चार्वाक के अनुसार उपर्युक्त चारों तत्व (Elements) भौतिक तत्व हैं ~~~~ विश्व की उत्पत्ति इन्हीं चारों तत्वों से होता है और इन्हीं चारों तत्वों में विश्व का विनाश भी होता है। क्योंकि उपर्युक्त चारों तत्वों का ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्षीकरण होता है।

चार्वाक दर्शन सृष्टिकर्ता (Creationism) में विश्वास नहीं करता। अतः विश्व के सृष्टिकर्ता की खोज के प्रयास को व्यर्थ और मानव की इच्छा मानता है, क्योंकि विश्व की सृष्टि में प्रकृति को एक प्राकृतिक नियम मानते हैं। इस प्रकार उनके दर्शन को स्वभाववादी तथा यंत्रवादी भी कहा जाता है। इसलिए कि विश्व प्रक्रिया में कोई प्रयोजन (Purpose) दिखाई नहीं पड़ता।

आत्मा संबंधी विचार — अन्य दर्शन के साथ अन्य भारतीय दर्शन आत्मा को शरीर से पृथक एक आध्यात्मिक सत्ता मानते हैं तथा उनके अनुसार शरीर नश्वर है किन्तु आत्मा नित्य है जैसा कि गीता में कहा गया है :—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ इसको [illegible]

अर्थात् आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते हैं, अग्नि जला नहीं सकती है और न पानी भिगो सकता है और न वायु सुखा सकती है। जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्रों का त्याग कर नया वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर का परित्याग कर दूसरा शरीर धारण करती है, शंकर ने भी आत्मा को नित्य बतलाया है। लेकिन चार्वाक अन्य भारतीय दर्शनों के विचार को स्वीकार नहीं करता। आत्मा को शरीर से पृथक नहीं मानता। वरन् चैतन्य युक्त शरीर ही आत्मा होती है। (चैतन्यविशिष्ट देहः आत्मा) अतएव भारतीय विचारक चैतन्य को आत्मा का गुण मानते हैं। न्याय-वैशेषिक चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक गुण मानते हैं क्योंकि उसका ज्ञान जाग्रत अवस्था में होता है किन्तु इनके अनुसार चैतन्य आत्मा का गुण नहीं हो सकता बल्कि शरीर का गुण हो सकता है।

~~[illegible]~~ 3.

यहाँ प्रश्न उठता है कि भौतिक तत्वों से निर्मित शरीर में चेतना का संचार कैसे होता है जबकि पृथक पृथक तत्वों में चेतना का अभाव पाया जाता है। चार्वाक उपर्युक्त प्रश्न का समाधान कुछ उपमाओं के सहारे देना चाहते हैं। जिस प्रकार कत्था, चूना और पान में ~~[illegible]~~ लाल रंग का अभाव पाया जाता है किन्तु उसी प्रकार भौतिक तत्वों में चेतना का अभाव पाया जाता है और इनके संयोग से ~~[illegible]~~ चेतना का प्रादुर्भाव स्वतः हो जाता है। इस तरह आत्मा और शरीर के बीच अभेद मानने के कारण चार्वाक के आत्मा संबंधी विचार को देहात्मवाद (The theory of the identity of soul & body) कहा जाता है जिसकी पुष्टि में चार्वाक ने अनेक तर्क का सहारा लिया है जो निम्न है:

(i) दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि व्यक्ति कहता है मैं मोटा हूँ, मैं लंगड़ा हूँ, मैं गोरा हूँ, मैं काला हूँ इत्यादि। यह कथन सिद्ध करता है आत्मा और शरीर का ~~[illegible]~~ तादात्म्य (Identity) सम्बन्ध है। अतः आत्मा और शरीर में पृथकता स्वीकार करने पर ~~[illegible]~~ दैनिक जीवन के इन कथनों का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

(ii) चार्वाक के अनुसार जन्म से पूर्व और मृत्यु के पश्चात आत्मा के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। जब तक शरीर जीवित है तब तक चेतना रहती है। शरीर के नष्ट होने पर चेतना भी लुप्त हो जाती है। शरीर से पृथक ~~[illegible]~~ आत्मा का अस्तित्व ~~[illegible]~~ नहीं होता। इस आधार पर चार्वाक शरीर को आत्मा से अभिन्न मानता है। इस प्रकार चार्वाक चैतन्य शरीर को आत्मा मानता है। आत्मा शरीर का एक गुणमात्र है।

चार्वाक ईश्वर का प्रत्यक्ष के अभाव ईश्वर के अस्तित्व को [illegible]